International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 09-12-2020; Accepted: 25-12-2020; Published: 19-01-2021
Volume 3; Issue 1; 2021; Page No. 01-04

सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से योगिता यादव की कहानियाँ

स्वप्ना चतुर्वेदी
शोधार्थी, हिंदी विभाग जैन (सम्भाव्य विश्वविद्यालय), बेंगलुरु, कर्नाटक, भारत

सारांश
नवलेखन पुरस्कार ज्ञानपीठ संस्था द्वारा युवा रचनाकारों जिनकी उम्र ४० साल या उससे कम को उनकी पहली प्रभावशाली रचना के लिए दिया जाता है। योगिता यादव को २०१२ में उनकी कहानी संग्रह क्लीन चिट के लिए नवलेखन पुरस्कार मिला। इनकी कहानियों में कई महत्वपूर्ण आयाम और विमर्श परिलक्षित हैं। इन्होंने अपनी स्वतंत्र सोच से हिन्दी साहित्य को एक नया स्वरूप प्रदान किया है। इनकी कहानियों की नारी विद्रोही हैं लेकिन किसी भी सामाजिक व्यवस्था का अनादर नहीं करती है। इनकी कहानियों में नारी विमर्श के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम भी दिखाई देते हैं। आधुनिक स्त्री समाज के नियमों और बंधनों का बहिष्कार नहीं करती हैं लेकिन उन्हें बदलने की सतत कोशिश करती हैं। जो इनकी कहानियों में परिलक्षित है। इस आलेख द्वारा इनकी कहानियों में सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को उजागर किया गया है।

मुख्य शब्द: नवलेखन, सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, पितृसत्ता, बदलाव, सामाजिक व्यवस्था, नई सोच।

प्रस्तावना

ज्ञानपीठ संस्था द्वारा संस्थापित नवलेखन पुरस्कार २००५ से शुरू हुआ। इन्हें नए युवा रचनाकारों को उनकी प्रथम प्रभावशाली हिन्दी रचना के लिए दिया जाता है| इनके पहली प्रकाशन के वक्त लेखक की उम्र ४० वर्ष या उससे कम होनी चाहिए।[१]

नवलेखन पुरस्कार (कहानी) विवरण: कहानियाँ, काव्य संकलन, उपन्यास तथा यात्रा वृत्तांत को यह सम्मान दिया गया है| लघु कहानियों में सर्वप्रथम कुणाल सिंह को २००५ में 'सनातन बाबू का दाम्पत्य' फिर २००६ में चंदन पाण्डेय को 'भूलना' और शशि भूषण द्विवेदी को 'ब्रह्महत्या और अन्य कहानियाँ', २००७ में विमलचंद्र पांडे को 'डर', २०१० में राजीव कुमार को 'तेज़ाब' और बिमलेश त्रिपाठी को 'अधूरे अंत की शुरुआत', योगिता यादव को २०१२ में क्लीन चिट, उपासना को २०१४ में 'एक जिंदगी... एक स्क्रिप्ट भर', श्रद्धा को २०१६ में 'हवा में फड़फड़ाती चिट्ठी' नामक लघु कहानियों के संकलन के लिए नवलेखन पुरस्कार मिला।[२]

नवलेखन ने हिंदी कहानी को एक नया स्वरूप प्रदान किया। नवलेखिकाओं ने स्त्री की मनःस्थिति, दाम्पत्य जीवन से सम्बन्धित विवशताएँ, तकनीकी विकास से परिवर्तित समाज और सांस्कृतिक आयाम, नैतिक मूल्य और मान्यताओं के घटने से बदलते समाज का रूप, आधुनिक समाज की संवेदनहीनता और अमानवीयता को प्रकाशित किया है। नवलेखन पुरस्कार से सम्मानित लेखिकाओं में से एक योगिता यादव हैं जिन्हें सन् २०१२

ई. में क्लीन चिट नामक कहानी संग्रह के लिए पुरस्कृत किया गया। योगिता यादव की कहानियों में मानवीय रिश्तों की जटिलता, टूटते हुए नैतिक मूल्य, आधुनिक और महानगरीय जीवन की विवशताएँ और सामाजिक और दाम्पत्य जीवन की जटिलताओं के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों को भी प्रकाशित किया है। प्रस्तुत आलेख के द्वारा हिन्दी नवलेखिका योगिता यादव की कहानी संग्रह 'क्लीन चिट' में समाज और संस्कृति से सम्बंधित किए गए सवालों को उजागर करने की कोशिश की गई है|

समाज और संस्कृति

"संस्कृति किसी भी जाति के सामाजिक जीवन की पहचान और अस्मिता को रेखांकित करती है।" ३ आधुनिक सामाजिक परिवेश में जाति एवं धर्म की सीमाओं को तोड़ा जा सकता है परंतु नियम नहीं बदलते। अतः धार्मिक विवाह में पुरुष के धर्म को स्त्री अपनाती है। जिसे योगिता यादव ने अपनी कहानी 'साइन बॉर्ड' की पात्रा शबनम द्वारा दर्शाया है। उसे अपने हिन्दू प्रेमी से शादी करने के लिए अपना नाम और अपनी पहचान को बदलना पड़ता है। शबनम नाम एक धर्म और पहचान का प्रतीक है। शबनम पूरी तरह से अपने बदले हुए पहचान को अपना नहीं पाती और जब शबनम को कहा जाता है कि अब उसकी पहचान बदल चुकी है, तब उसके लिए वह अस्वीकार्य होता है। "तुम शीतल हो, शीतल"। लेकिन मैं तो शबनम।"४ अपने प्राकृतिक स्वरूप में स्त्री द्वंद्व तथा घर्षण को किसी भी हालत में नज़रअंदाज़ करने की कोशिश में लगी रहती है। इसके लिए अपनी इच्छाओं का गला घोंट देती है। समाज यदि सूक्ष्मता से देखे तो ये प्रतिरोध के दबे हुए स्वर हैं। इनकी 'पायल' कहानी की नायिका स्नेह की शादी सम्पन्न परिवार में होती है लेकिन वहाँ पर दहेज के बारे में उसके ससुराल वाले दबे आवाज़ में आपस में बातें करते हैं। उनके यहाँ की बहुएँ सबसे अंत में खाना खाती हैं। यह उस परिवार का नियम है। वह एक रूढ़िवादी परिवार है जहाँ पर बहुओं को खाना बनाना होता है लेकिन क्या बनाना है वह परिवारवाले ही तय करते है। हमारे सांस्कृतिक बोध में पितृसत्ता इतने प्रगाढ़ रूप में समाई हुई है कि क्या आवश्यक तथा क्या अनावश्यक यह निर्धारित करना कठिन हो जाता है| समय के साथ परिवर्तित न होनेवाली परम्पराएँ दकियानूसी एवं अमानवीय हो जाती हैं। मनुष्य को नगण्य बनाते हुए उनकी भावनाओं की उपेक्षा होती है। दहेज प्रथा भी इसी प्रकार की एक परम्परा है जिसने स्त्रियों को अर्थोपार्जन का जरिया बना दिया है। नव नवीन सम्बन्धो का निर्धारण आज भी व्यावहारिक रूप में दहेज़ के आधार पर हो रहा है| इतना हो कर भी नववधुओं से अपेक्षाओं में कोई रियायत नहीं है| पायल से अत्यधिक लगाव रखनेवाली स्नेह अंततः अपने नए परिवार के व्यवहार से क्षुब्ध हो उसी चहेते पायल का त्याग कर देती है।

नव नवीन सामाजिक परिदृश्य: धर्म और जाति के अन्तर्गत इनकी कहानी 'क्लीन चिट' में सिमरन आधुनिक युग की सक्षम युवतियों का प्रतिनिधित्व करती है| उसके पिता की मृत्यु हो जाने के बाद सिमरन की माँ उसे और उसकी छोटी बहन को सम्भालती हैं। जहाँ पर उसकी माँ काम करने जाती हैं, वहाँ पर लोग उसे विधवा होने के कारण बेचारी की नज़र से देखते है। कैंसर से सिमरन की माँ की मृत्यु हो जाने के बाद सिमरन के रिश्तेदार उनके द्वारा चुने हुए लड़के से उसकी शादी करवाना चाहते थे लेकिन सिमरन ने पहले से ही अपना जीवन साथी सुन लिया था अत: अपने परिवार के सदस्यों का सामना करते हुए उसने अपनी इच्छानुसार ही निर्णय लिया| आज भी नारी कितनी ही शिक्षित और स्वावलम्बी क्यों न हो जाए लेकिन उसे अपने लिए फैसला करने के लिए सक्षम नहीं समझा जाता है। आज भी नारी सामाजिक और नैतिक व्यवस्था से पूर्ण रूप से स्वछंद नहीं हुई हैं। वे कुछ समय के

लिए भटकन वाली ज़िन्दगी जीने लगती हैं लेकिन उनका पूर्ण रूप से बहिष्कार भी नहीं कर पाती हैं। जिसके कारण वे आत्म-ग्लानि में अपनी जान भी दे देती हैं, जिसे हमने कहानी 'नागपाश' की प्रिया में देखा है।

इनकी कहानी 'अनहोनी' की सीमा जो सामाजिक और पारिवारिक बंधनों के कारण अपने पति विश्वास के साथ रहती है। सीमा को अपने पति से कई अपेक्षाएँ थी लेकिन उसके पति को उससे कोई मतलब नहीं था। जिससे वह अपने पति और इस रिश्ते से खुश नहीं थी। लेकिन कभी भी उसने उसे छोड़ने की हिम्मत नहीं की। लेकिन वह अपने रिश्ते और विवाह से इतनी हताश हो चुकी थी कि उसने अपने सपने में अपने पति विश्वास का खून कर दिया। वह इस घुटन से आज़ादी चाहती थी लेकिन उसमें अपने पति को छोड़ने का साहस नहीं था। वह अपने इस रिश्ते से छुटकारा चाहती है लेकिन वह अपने बच्चे के कारण उसे छोड़ नहीं पाती है। फिर भी वह अपनी खुशी के लिए सपने में अपने पति विश्वास का खून कर देती है। वह कहती है कि "अग्नि के समक्ष हमने जीवन भर साथ निभाने की कस्में खाई थीं।"५ लेकिन अब इस सामाजिक बंधन में उसे घुटन होती है। वह तर्क में कहती है कि उसके पति के न होने से बस उसके बच्चे को ही परेशानियों का सामना करना पड़ेगा क्योंकि उनके माता-पिता से सम्बंधित सारे कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए विश्वास के बड़े भाई है।

हमारे समाज में किसी भी परिस्थिति में औरतों को आज़ादी नहीं है। योगिता यादव की 'दो बिंदियाँ' कहानी की नायिका समाज और अपने परिवार की खुशी के लिए एक दुहाजू से शादी कर लेती है लेकिन उसके बाद भी उसे अपनी बहन के साथ ही रहना पड़ता है। लोग इसका कारण जानना चाहते है। "सब पूछते है, तेरे ससुराल वाले क्यों नहीं बुलाते तुझे, कोई ऐसी-वैसी बात तो नहीं हैं? ६ यह हमारे समाज का सबसे अधिक कष्टदायक व्यवहार है जहां यह दिखाई देता है कि किसी भी परिस्थिति में दोष स्त्री को ही दिया जाता है| आज भी अपने सतीत्व का प्रमाण देते हुए उसे अग्नि परिक्षा देनी होती है|

इस पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियाँ भी अपनी भूमिका निभाती हैं| चाहे वो 'पायल' की स्नेह हो या 'गैर बाग से' की जुबी जिसकी नई माँ अपने स्वार्थ के लिए उसकी शादी नहीं होने देना चाहती है| वो सोचती हैं कि अगर वह चली गई तो उनका घर कौन सम्भालेगा। सामाजिक और पारिवारिक विडम्बना देखिए कि नारी ही नारी के बारे में अच्छा नहीं सोचती हैं। वे स्वार्थी होकर सिर्फ अपने ही बारे में सोचती हैं।

आज भी हमारे इस पुरुष-प्रधान समाज में स्त्रियों को अपने लिए निर्णय लेने का कोई अधिकार नहीं है। पुरुष ही उनके लिए सारे माप-दंड बनाते आए हैं और बना रहे हैं। जहाँ पर उनका साम्राज्य होता है वहाँ पर स्त्रियों को आने की स्वीकृति नहीं मिलती है। जो आज भी हमारे समाज में व्याप्त है। इन्हीं सब सवालों को योगिता यादव ने अपनी कहानी '१०८वाँ मनका' में इंगित किया है। जिसमें वैदेही एक अखाड़े के साधुओं के मठ में रहने के लिए जाती है, जहाँ पर सिर्फ पुरुषों की रहने की अनुमति थी। वहाँ पर जब वैदेही आती है, तब एक साधु उसे देखकर कहता है कि "स्त्री और मठ में? नहीं नहीं! हे ईश्वर ! यह उचित नहीं है।"७ हर एक को वैदेही के मठ में आनेपर परेशानी थी और सभी ने अपनी अनिच्छा जाहिर की थी। यह स्पष्ट नहीं है कि उन्हें डर वैदेही के लिए था या अपने लिए। इस प्रकार स्थित मानदण्डों को चुनौती देती है योगिता यादव के स्त्री पात्र।

उपसंहार

नवलेखिकाओं ने अपनी बेबाक और स्वछंद सोच से हिन्दी साहित्य और समाज को एक नया रूप प्रदान किया है। इनकी कहानियों की नारी विद्रोही होने के

साथ-साथ वे किसी भी सामाजिक व्यवस्था का अनादर नहीं करती है। इनकी कहानियों में नारी विमर्श के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम भी दिखाई देते हैं। आधुनिक स्त्री समाज के नियमों और बंधनों का बहिष्कार नहीं करती हैं लेकिन उन्हें बदलने की सतत कोशिश करती हैं। जो इनकी कहानियों में परिलक्षित है।

अंत में हम कह सकते हैं कि इन्होंने अपनी कहानियों में आधुनिक समाज का बदलता स्वरूप, वैवाहिक जीवन और तत्कालीन समाज और संस्कृति के बदलते स्वरूप को बड़े ही यथार्थ और सशक्त ढंग से उजागर किया है। "संस्कृति की विकास-प्रक्रिया सामाजिक विकास-प्रक्रिया से गहरे स्तर पर जुड़ी है क्योंकि संस्कृति सामाजिक अधिरचना का महत्त्वपूर्ण अंग होती है।"[८]

सहायक ग्रंथ सूची

1. www.jnanpith.net dated 1st dec 2019
2. www.jnanpith.net 1st dec 2019
3. आलोचना का सांस्कृतिक आयाम, परशुराम, संभव प्रकाशन, प्रथम संस्करण: २०१९, पृ. सं. ६१
4. क्लीन चिट कहानी संग्रह, योगिता यादव (साइन बॉर्ड कहानी), भारतीय ज्ञानपीठ, दूसरा संस्करण: २०१५, पृ. सं. ८६
5. क्लीन चिट कहानी संग्रह, योगिता यादव (अनहोनी कहानी), भारतीय ज्ञानपीठ, दूसरा संस्करण: २०१५, पृ. सं. ७२
6. क्लीन चिट कहानी संग्रह, योगिता यादव (दो बिंदियाँ कहानी), भारतीय ज्ञानपीठ, दूसरा संस्करण: २०१५, पृ. सं. ६७
7. क्लीन चिट कहानी संग्रह, योगिता यादव (१०८वाँ मनका कहानी), भारतीय ज्ञानपीठ, दूसरा संस्करण: २०१५, पृ. सं. ८८
8. आलोचना का सांस्कृतिक आयाम, परशुराम, संभव प्रकाशन, प्रथम संस्करण: २०१९, पृ. सं. ६१